पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

अमृत पानी

खेती के लिए अमृत

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

अमृत पानी क्या है?

अमृत पानी जैविक खेती में प्रयोग किया जाने वाला एक प्रभावकारी जैविक कीटनाशक है, जो सभी प्रकार की फसलों/पौंधों में लगने वाले कीड़ों को नष्ट करने के साथ साथ, मिटटी की उपजाऊ क्षमता और फसल की पैदावार बढ़ाने में भी काफी कारगर है।

तैयार अमृत पानी को छानते हुए अमनिया गाँव के लोग

अमृत पानी–खेती के लिए अमृत

अमृत पानी बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1. गाय का ताजा गोबर – 1 किग्रा
2. गौमूत्र – 1 लीटर
3. नीम की हरी पत्तियां – 1 किग्रा
4. चने का आटा – 1 किग्रा
5. गुड़ – 100 ग्राम
6. पानी – 10 लीटर
7. प्लास्टिक ड्रम/मिटटी का बर्तन – 1

अमृत पानी को उपयोग करने का तरीका

1 लीटर अमृत पानी को 100 लीटर पानी में घोल कर स्प्रे पंप की सहायता से आप लगभग एक एकड़ खेत में छिड़काव कर सकते हैं। अधिक फल फूल के लिए और कीड़ों के प्रकोप से बचने के लिए हर 15 दिन के अंतराल पर अमृत पानी का छिड़काव करना चाहिए।

अमृत पानी बनाने की प्रक्रिया

- सभी सामग्रियों को 15 लीटर की क्षमता वाली प्लास्टिक की बाल्टी में डाल दें। फिर एक लकड़ी की सहायता से इस घोल को अच्छी तरह से हिलायें।
- अब बाल्टी का मुँह किसी कपडे से बांधकर छायादार स्थान में 10 दिन के लिए रख दीजिये। एक लकड़ी की सहायता से सुबह शाम घडी की दिशा और विपरीत दिशा में 5 से 10 मिनट तक इस घोल को अच्छी तरह से हिलायें और 10 दिन बाद किसी सूती कपडे की सहायता से छान ले।

अमृत पानी बनाती अमनिया गाँव, छत्तीसगढ़ की महिलायें

अमृत पानी से होने वाले लाभ

यह कीड़ों विशेषकर रस चूसने वाले कीड़ों की रोकथाम में बहुत कारगर है। पौंधों की अच्छी बढ़त के साथ यह दानों की चमक भी बढ़ाता है और अच्छी पैदावार देता है।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत् भूमि एवम पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक खेती के मित्र कीटों को बिना नुकसान पहुचाये परभक्षी कीटों को भगाकर खेत और फसलों को कीटों द्वारा होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

अमृत पानी बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- अमृत पानी को हमेशा मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में बनायें।
- गुड़ व बेसन को पहले अलग से पानी में घोल लें अन्यथा डल्ले बन जाते हैं और अच्छे से मिलाने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है।